Course	:	B.Ed, Part-II
Paper	:	XVI (सामाजिक विज्ञान का अध्ययन) (Pedagogy of Social Science)
Prepared by	:	Dr. Pallavi
Topic	:	भारत का भूगोल : राजनैतिक विभाजन, नदियाँ एवं स्थलाकृतियाँ **Indian Geography : Political Divisions, Rivers and Landforms**

1. प्रस्तावना (Introduction)

इस इकाई के अंतर्गत भारत के भूगोल के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई है। भारत के भूगोल का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम इसके भौतिक विभागों, जलवायु, वनस्पति इत्यादि की जानकारी प्राप्त करें। इसे समझने के लिए भारत की स्थलाकृतियों को समझना अति आवश्यक है, जिसकी विस्तृत जानकारी प्रस्तुत पाठ में दी गई है। इसके अलावा, इसके (भारत के) राजनीतिक विभाजन (Political Division), नदियाँ आदि को भी विस्तार से बताया गया है। भारत की स्थलाकृतियाँ, इसके जलवायु को निर्धारित करने में अपनी अहम भूमिका निभाती हैं। अब हम विस्तार से इसके संबंध में पढ़ेंगे।

2 भारत की स्थलाकृतियाँ (Landforms of India)

भारत की स्थलाकृतियाँ को समझने के लिए उसके प्रमुख भौतिक विभाजन को जानना आवश्यक है, क्योंकि भारत का भौतिक विभाजन इसके स्थलाकृतियों को सही ढंग से क्रमवार व्याख्या करती है। यदि हम भारत का भौतिक विभाजन करते हैं तो इसे प्राकृतिक या धरातलीय स्वरूप (Relief or Physical features) और संरचना के आधार पर भारत के पाँच प्रमुख प्राकृतिक विभाग (Physical divisions) है और वे हैं - उत्तरी विशाल पर्वतमाला, विशाल मैदान, दक्षिणी पठार, तटवर्ती मैदान तथा मरूस्थलीय भाग।

चित्र : **भारत के भौतिक विभाग**

(1) उत्तरी पर्वत प्रदेश या विशाल पर्वतमाला (Northern Mountain Region or Longest Mountain Range) : भारत की उत्तरी सीमा पर विश्व की सबसे ऊँची एवं विस्तृत काराकोरम पर्वतमाला है। यह विशाल पर्वतमाला भारत की उत्तरी सीमा के साथ-साथ फैली हुई है। इसमें काराकोरम एवं हिमालयन पर्वत श्रेणी शामिल हैं। यह पूर्व-पश्चिम में इतनी विस्तृत दूसरी पर्वतमाला नहीं मिलती है। यह विश्व की नवीनतम

मोड़दार अथवा वलित (Folded Mountain) है । यह उस पर्वत समूह के पर्वत श्रेणी हैं जो यूरोप में **पिरेनीज** और **आल्प्स** से आरंभ होकर भारत की सारी उत्तरी सीमा से होते हुए पूर्वी सीमा और उससे आगे तक फैले हुए हैं । इन्हें हम मुख्य रूप से हिमालय यानी हिम का घर (abode of snow) के नाम से जाना जाता है । इसका विस्तार 2500 km (पश्चिम में सिंधु और पूर्व में ब्रह्मपुत्र के बीच) है । इसकी चौड़ाई 150 से 400 km है । इस पर्वत प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग 5,00,000 वर्ग किलोमीटर है । इसकी ऊँचाई 6000 मीटर है । इस प्राकृतिक विभाग के चार प्रमुख खंड (four main sections) हैं, जो विभिन्न नदियों के खड्डो (gorges) द्वारा एक-दूसरे से पृथक हैं । ये खंड या उप-विभाग हैं - (1) सिंधु-सतलज के बीच 560 km की दूरी में फैला **पंजाब हिमालय** (The Panjab Himalayas) (2) सतलज एवं काली नदियों के बीच 320 km के बीच फैला **कुमायुँ हिमालय** (Kumaon Himalaya) (3) काली और तिस्ता नदियों के बीच 800 km की दूरी में फैला **नेपाल हिमालय** (Nepal Himalaya) और (4) तिस्ता एवं दिहांग (साँपो-ब्रह्मपुत्र) नदियों के बीच 720 km की दूरी में फैला **असम हिमालय** (Assam Himalyas) । हिमालय पर्वत के इन विभिन्न भागों का स्थानीय नाम भी हैं, जैसे-पंजाब हिमालय के स्पष्ट दो भाग हैं जिसे 'कश्मीर हिमालय' तथा 'हिमाचल हिमालय' के नाम से भी जाना जाता है । मुख्य हिमालय (सिंधु से ब्रह्मपुत्र के बीच) को पश्चिमी, मध्यवर्ती और पूर्वी हिमालय के नाम से पुकारा जाता है । इसे हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि हिमालय पर्वत की तीन महत्त्वपूर्ण पर्वत श्रृंखलाएँ हैं - हिमाद्रि, हिमाचल और शिवालिक । हिमालय का पूर्वी विस्तार पूर्वांचल पर्वत कहलाते हैं । दुनिया की सबसे ऊँची चोटियाँ हिमाद्रि में है । हिमालय में भारत का महत्त्वपूर्ण पर्वतीय स्थल है और शिवालिक में घने वन हैं। हिमालय की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि पूर्वी हिमालय एकाएक काफी ऊँचाई को प्राप्त करता है । जैसे एवरेस्ट (कंचनजंघा के पास), परन्तु पश्चिमी हिमालय क्रमिक श्रृंखलाओं में ऊँचाई को प्राप्त करता है । हिमालय के प्राकृतिक रूप से प्रवाहित जल और हिम के निरंतर कार्य भारत के जनजीवन को प्रभावित करने तथा भारत के वर्त्तमान स्वरूप में अपना अहम योगदान दिया है ।

(2) दक्षिणी पठार/प्रायद्वीपीय पठार (Deccan Plateau/Peninsular Plateau) : भारत का यह भाग प्राचीन गोंडवाना भूमि का अंश है । यह त्रिभुजाकार है । इसका उत्तरी भाग चौड़ा तथा दक्षिण की ओर क्रमशः पतला होता जाता गया है । यह विशाल पठार विशाल मैदानी भाग के दक्षिणी भाग में अवस्थित है । यह पठार आग्नेय शैलों का बना हुआ है और अत्यंत सख्त है । इसके दो हिस्से हैं - उत्तर में मालवा का पठार, जिसकी ढाल उत्तर की ओर है और दक्षिण में ढक्कन का पठार । मालवा के पठार के उत्तर-पश्चिम में भारत का विशाल रेगिस्तान है । यह अंतः स्थलीय अपवाह क्षेत्र है, जो चट्टानों और बालू से मिलकर बना है । ढक्कन का पठार नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है । इसके दोनों ओर पश्चिमी घाट एवं पूर्वी घाट हैं । ये प्राचीन पर्वत हैं । पश्चिमी घाट चार बड़ी पहाड़ी श्रृंखलाओं से बना है, जो अरब तट के (प्रायद्विपीय पठार) समांतर है । पश्चिमी घाट अपेक्षतया कम ऊँची एवं इसके अंतर्गत विच्छिन्न पहाड़ी श्रृंखलाएँ हैं । अरावली, राजमहल और शिलांग की पहाड़ियाँ इस पठार की उत्तरी सीमा पर है । इस पठार की ढाल उत्तर में उत्तर-पूरब की ओर है। दक्षिण भाग में ढाल पश्चिम से पूरब की ओर है । यह सम्पूर्ण पठार छोटे-छोटे पठारों में विभक्त है, जिनमें चपटे शिखरों की पहाड़ियों की प्रधानता है ।

प्रायद्वीपीय पठार की उल्लेखनीय विशेषताएँ ये हैं - (i) यहाँ प्राचीन पर्वतमालाओं के अवशेष मिलते हैं। (ii) ये पठार काफी घर्षित अवस्था में है । (iii) यहाँ भ्रंश घाटियाँ मिलती हैं । (iv) यहाँ व्यवस्थित लावा-परतें मिलती हैं । (v) इस पठारी भाग में हिमाच्छादन के प्रमाण मिलते हैं । (vi) पठार की बाह्य परिरेखा का निर्माण करने वाले सँकरे तटीय मैदान पाये जाते हैं । पठार में अनेक नदियाँ बहती हैं, जिनमें से दो नदियाँ अरब सागर में तथा शेष बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं । पश्चिमी तटीय मैदान जो एक सँकरी पट्टी है, कोंकण एवं मालाबार तट में विभाजित है । इनमें मुख्यतया ज्वारनद और समुद्रताल हैं । पूर्वी तटीय मैदान चौड़ा है, यह दो भागों में विभाजित है - (i) उत्तरी अर्धचंद्राकार तट और कोरोमंडल तट । इसके अंतर्गत कई नदियों के मुहाने अथवा डेल्टा अवस्थित हैं ।

(3) मध्यवर्ती विशाल मैदान (Middle Great Plain) : हिमालय पर्वत तथा दक्षिण के पठार के मध्य गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र एवं सतलल द्वारा बनाए गए उपजाऊ एवं समतल मैदान फैला है, जिसे हम उत्तर का विशाल

मैदान कहते हैं । यह जलोढ़ मैदान है, अतः यहाँ उपजाऊ काँप मिट्टी पाया जाता है । इस उपजाऊ मैदान का निर्माण नदियों द्वारा लाए गए निक्षेपित मृदा से हुआ है । इन नदियों में से कुछ का उद्‌गम स्थल हिमालय पर्वतमाला तथा कुछ का प्रायद्वीपीय पठार है । यमुना, घाघरा, गंडक, कोसी और तिस्ता हिमालय से निकलती हैं । जबकि चंबल, सिंध, बेतवा, सोन, केन और दामोदर नदियाँ प्रायद्वीपीय पठार से निकलती हैं । ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय पर्वत के पार तिब्बत से निकलती है ।

(4) थार का मरूस्थल (Desert of Thar) : उत्तरी-पश्चिमी भारत में थार का शुष्क एवं उष्ण जलवायविक स्थिति के अंतर्गत ऊँचे तापमान, शुष्कता तथा अत्याधिक तापान्तर सम्मिलित हैं, जिसके प्रभाव स्वरूप चट्टानें बालू में तबदील हो गई है । यहाँ गरम धूल भरी आँधियाँ चला करती हैं तथा रेत के टीले पाए जाते हैं । इसका विस्तार दक्षिणी हरियाणा, पश्चिमी राजस्थान एवं उत्तरी गुजरात (कच्छ) राज्यों में है । **लूणी** इस क्षेत्र की प्रमुख तथा महत्त्वपूर्ण नदी है ।

(5) समुद्रतलीय मैदान (Coastal Plains) : प्रायद्वीपीय पठार के पूर्व एवं पश्चिम में समुद्र तक दो सँकरे मैदान मिलते हैं, जिन्हें क्रमशः "पूर्वतटीय मैदान" और "पश्चिम तटीय मैदान" कहते हैं । इन मैदानों को सागर ने तट से टकराती लहरों के निक्षेपण से और स्थल के पठारों से निकलने वाली नदियों के निक्षेपण से बना है । **पश्चिमी तटीय मैदान** को उत्तर से दक्षिण की ओर क्रमशः कोंकण, कन्नड़ और मालाबार तट के नाम से जाना जाता है । इसी प्रकार **पूर्व तटीय मैदान** को उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए कलिंग, उत्तरी सरकार (गोलकुंडला) ओर कोरोमंडल (कर्नाटक) तट कहते हैं ।

इस प्रकार, हमलोगों ने भारत के मुख्य स्थलाकृतियाँ की जानकारी प्राप्त की ।

3. भारत की राजनीतिक विभाजन (Political Divisions of India)

भारत का राजनीतिक विभाजन के दो भाग हैं - (1) अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक विभाजन तथा (2) आंतरिक राजनीतिक विभाजन ।

2.3.1. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक विभाजन (Political Devision at International Level) : भारत की आकृति पूर्णतः त्रिभुजाकार न होकर चतुष्कोणीय है । यह पूर्णतः उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है । इसका विस्तार विषुवत् रेखा के उत्तर में 8°4' से 37°6' उत्तरी अक्षांश और 68°7' से 97°25' पूर्वी देशांतर देश के बीच फैला है । कर्क रेखा इस देश के मध्य से गुजरती है । 82½° पूर्वी देशांतर रेखा भारत के मध्य से गुजरती है । इसके पूरब तथा पश्चिम के भागों के समय में प्रति देशांतर 4 मिनट का अंतर पड़ता है । उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 3,214 किलोमीटर और पूरब से पश्चिम की चौड़ाई 2,933 किलोमीटर है । यह क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सातवाँ देश है ।

चित्र : **भारत की भौगोलिक स्थिति (अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर)**

यह हिन्द महासागर के सिरे पर इस प्रकार स्थित है कि यह पूर्वी गोलार्द्ध के मध्य में पड़ता है । यूरोप एवं अमरीका के पश्चिमी भागों से भारत लगभग समान दूरी पर पड़ता है ।

(i) **अंतर्राष्ट्रीय सामुद्रिक मार्ग (International Sea Ways) :** अंतर्राष्ट्रीय सामुद्रिक मार्ग इसके तट को छूते हुए निकलते हैं । भारत से सामुद्रिक मार्ग पश्चिम एवं उत्तर-पश्चिम में संयुक्त राज्य अमरीका, ग्रेट ब्रिटेन, पश्चिमी यूरोप, दक्षिण अमरीका और अफ्रीका को, दक्षिण में श्रीलंका, पूरब में सिंगापुर, मलेशिया, इण्डोनेशिया, हांगकांग, चीन, जापान तथा दक्षिण-पूर्व में ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड को जाते हैं ।

(ii) **स्वेज नहर का प्रभाव (Effects of Swez Canal) :** स्वेज नहर के बन जाने के बाद भारत की स्थिति का महत्त्व और बढ़ गया है क्योंकि इसके द्वारा पश्चिमी यूरोपीय देशों और भारत के पश्चिमी तटीय बंदरगाहों के बीच लगभग 4,800 km दूरी कम हो गयी है । **स्वेज नहर** और पूर्व में **मलक्का** जल संयोजक से आरंभ होने या उनमें से निकलने वाले सभी व्यापारिक जहाज भारत के समुद्रतटीय बंदरगाह से होकर जाते हैं, जिसमें भारत पश्चिम के विकसित एवं कला-कौशल प्रधान देशों को पूर्व के विकासशील कृषि प्रधान देशों से मिलाने के लिए एक सेतु बंध का कार्य करता है ।

(iii) **अतीत में सभ्य देशों से सम्पर्क (Connection with Development Countries in Ancient Period) :** भारत अपनी महत्त्वपूर्ण स्थिति के कारण अतीत या प्राचीन काल से ही तात्कालिक सभ्य देशों के सम्पर्क में रहा है, क्योंकि भारत प्रमुख व्यापारिक स्थल मार्गों का केन्द्र रहा है । पूरब की ओर चीन, जापान, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, सुमात्रा, जावा, बाली आदि देशों तक तथा पश्चिम की ओर अरब, फारस, मिस्त्र, यूनान और रोम तक भारतीय व्यापारियों के जहाज़ विभिन्न प्रकार की बहुमूल्य वस्तुएँ गरम मसाले, मोती, हीरा, जवाहरात, सोना, रेशमी और सूती वस्त्र आदि ले जाया करते थे ।

(iv) **उत्तम वायुमार्गों की स्थिति (Good Position of Airways) :** भारत की स्थिति वायुमार्गों की दृष्टि से उत्तम की जा सकती है । पश्चिमी देशों से सुदूर पूर्व की ओर जाने वाले अर्थात चीन, जापान, इण्डोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों से पश्चिमी यूरोप को जाने वाले वायुयान भारत से होकर जाते हैं । दिल्ली (पालम), बम्बई (सांताक्रूज), चेन्नई और कोलकात्ता (दमदम) अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के हवाई अड्डे हैं, जहाँ सभी वायुयान रूककर ईंधन प्राप्त करने के साथ-साथ यात्रियों को उतारते हैं ।

इसके अलावा यह न सिर्फ हिंद महासागर क्षेत्र का प्रमुख देश है । यहाँ तक की इसके निकटवर्ती महासागर का नाम भी इसी के नाम पर पड़ा है, हिन्द महासागर (Indian Ocean) ।

2.3.2. भारत की सीमाएँ (Boundaries of India) : भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत श्रेणी दक्षिण-पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण-पूरब में बंगाल की खाड़ी तथा दक्षिण में हिन्द महासागर इसकी प्राकृतिक सीमाएँ बनाते हैं । हिमालय की पर्वत श्रृंखलाएँ भारत को सोवियत संघ रूस और मध्य एशिया के अनेक देशों से पृथक् रखती है । कुछ दर्रे भी इस ओर स्थित हैं, जैसे - जोजिला, काराकोरम और जेलेप्का आदि । परन्तु, ये अत्यधिक ऊँचाई पर अवस्थित हैं, अत: हमेशा बर्फ से ढँके रहते हैं । इसी प्रकार, उत्तरी-पश्चिमी भागों में, जो अब पाकिस्तान में अवस्थित है, में अनेक दर्रे हैं, जैसे - खैबर, गोमल, बोलन, टोची और कुर्रम इत्यादि, जो प्राचीन काल में आर्य, मंगोल, तुर्क, हूर्ज आदि जातियों के आने का मार्ग बना था । कालांतर में ये जातियाँ यहीं बस गई थीं । यद्यपि पूरब की ओर हिमालय की श्रेणियाँ नीची हैं, परन्तु सघन वनों, गहरी और तीव्रगामी नदियों के कारण भारत और बर्मा के बीच स्थल मार्गों द्वारा अधिक आवागमन नहीं होता है । भारत में हिन्द महासागर की ओर से भी आक्रमणकारी आये । अंग्रेज, डच, फ्राँसीसी और पुर्तगाली व्यापारी हिन्द महासागर से होकर आये ।

भारत का स्थल सीमा 5,200 किलोमीटर लम्बी है, जिसमें हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र सम्मिलित हैं । सन् 1962 तक इस सीमांत को प्राय: सुरक्षित माना जाता था, किन्तु चीन के आक्रमण के उपरांत अब यह सीमांत निरापद नहीं रहा है । अत: इसकी देखभाल एवं सुरक्षा हेतु इस सीमांत प्रदेश में स्पष्ट प्रशासनिक इकाइयाँ स्थापित की गयी है : (1) उत्तराखण्ड, जिसमें उत्तर प्रदेश के पिथौरागढ़, चमोली और उत्तरी काशी जिले सम्मिलित किए गए हैं । (2) लद्दाख सीमा प्रदेश, जिसका प्रशासन जम्मू-कश्मीर राज्य द्वारा किया जाता है ।

(3) भूटान-सिक्किम प्रदेश, जिसमें सिक्किम भारत का ही एक राज्य है, किन्तु भूटान की सुरक्षा का दायित्व संधि द्वारा भारत सरकार पर है । (4) अरूणाचल प्रदेश (पूर्व के नेफा) के अंतर्गत कामेंग, सुबनसीरी, सिक्यांग, लोहित और तिरफ जिले हैं ।

भारत के सीमांत का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है :

(1) **भारत-चीन सीमांत (Indo-China Border) :** भारत और चीन के बीच की सीमा रेखा को **मैकमोहन रेखा** कहते हैं । यह रेखा 1914 में शिमला सम्मेलन जिसमें भारत, चीन तथा तिब्बत के राजदूत उपस्थित थे । सन् 1962 के बाद यानि 20 अक्टूबर, 1962 को इस रेखा को पार कर तिब्बत को हड़प लेने के बाद भारत एवं चीन के मध्य तीन स्पष्ट सीमा रेखा में विभक्त है :

(क) **उत्तरी-पश्चिमी सीमांत रेखा :** इसका दो-तिहाई भाग चीन (तिब्बत) और कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र में है । जो भारत, चीन तथा अफगानिस्तान के मिलन-बिंदु से आरंभ होकर जम्मू-कश्मीर राज्य को चीन (तिब्बत) और सिक्यांग से अलग करती है ।

(ख) **मध्य सीमांत रेखा :** यह हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश राज्यों को चीन से अलग करती है । यह सीमा रेखा हिमालय के जल-विभाजक द्वारा अंकित है ।

(ग) **पूर्वी सीमांत रेखा :** सिक्किम और तिब्बत के मध्य एक प्राकृतिक सीमा है, जो जल-विभाजक के सहारे फैली है ।

2. **भारत बर्मा के बीच सीमांत (Boundary between India and Burma) :** इन दोनों देशों के बीच हिमालय से निकलने वाली पूर्वी पर्वत श्रेणी (जिसमें लुशाई, पटकोई और अराकनयोमा सम्मिलित हैं) स्थलीय सीमा बनाती है । इसकी पूर्वी सीमा पर स्थित राज्यों में असम, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैण्ड और मणिपुर उल्लेखनीय है ।

3. **भारत-बांग्लादेश के बीच सीमांत (Boundary between India & Burma) :** पूरब की ओर बांगलादेश और भारत के बीच स्थलीय राजनीतिक सीमा रेखा है । इसकी सीमा पर पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा और मेघालय राज्यों के भाग हैं ।

4. **भारत-पाकिस्तान सीमांत (Indo-Pakistan Border) :** पश्चिम में भारत एवं पाकिस्तान के बीच की सीमा कृत्रिम एवं खुली है । भारत की पश्चिमी, सीमा पर गुजरात, राजस्थान, पंजाब तथा जम्मू और कश्मीर राज्य स्थित है । विभाजन के उपरांत पाकिस्तान घुसपैठियों द्वारा कश्मीर पर आक्रमण किया गया और उसके उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र पर अवैधानिक रूप से अधिकार किया गया । तब से आज तक (ताशकंद समझौता के उपरांत भी) कश्मीर सीमा का विवाद हल नहीं हो पाया है । भारत की सम्पूर्ण पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा के लिए अनेक फौजी चौकियाँ स्थापित की गयी हैं ।

5. **भारत की समुद्री सीमा (India's Ocean Borders) :** भारत की समुद्री सीमा स्थलीय सीमा रेखा की अपेक्षा कम है । भारतीय तट रेखा की लम्बाई 6,100 किलोमीटर है । भारत के दक्षिणी भाग का विस्तार हिन्द महासागर में प्रायद्वीपीय रूप में है, जिसका दक्षिणी-पूर्वी भाग **बंगाल की खाड़ी** तथा दक्षिणी-पश्चिमी भाग **अरब सागर** के नाम से प्रसिद्ध है । दक्षिण में **मन्नार की खाड़ी** श्रीलंका को भारत से अलग करती है । प्रायद्वीपीय विस्तार के कारण भारतीय तट रेखा को मुख्यत: दो भागों में विभाजित किया गया है ।

चित्र : **भारत की सीमा रेखा**

(i) **पूर्वी तट रेखा :** पूर्वी तट रेखा गंगा के डेल्टा से लेकर **कुमारी अंतरीप** तक फैली है । उसे दो भागों में बाँटा गया है :- (क) **उत्तरी सरकार तट** - यह तट रेखा गंगा के मुहाने से लेकर कृष्णा के मुहाने तक फैली है । इसके अंतर्गत कुछ अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मुख्य बंदरगाह है, जिसमें कलकत्ता बंदरगाह हुगली नदी के तट पर बनाया गया है । हुगली नदी के मुख पर समुद्री सीमा पर नवीन बंदरगाह **हल्दिया** बनाया गया है । **डालफिन नोज** नामक चट्टान के समीप विशाखपटनम् का बंदरगाह है । इसी भाग में **कोकोनाड़ा** तथा **मछलीपत्तनम्** नामक बंदरगाह भी स्थित है ।

(ख) **कोरोमण्डल तट** - यह तट रेखा कृष्णा के डेल्टा से लेकर कुमारी अंतरीप तक फैली है । मद्रास, वर्त्तमान में चेन्नई एक कृत्रिम बंदरगाह है । इसके अलावा धनुषकोटी, तूतीकोरन, कारीकल, नागापट्टम, पॉडिचेरी आदि अनेक छोटे बंदरगाह है । भारत और श्रीलंका के मध्य समुद्र बहुत सँकरा है । इन दोनों देशों के मध्य चट्टानों और रेतीले टीलों का एक क्रम फैला है, जिसे **आदम का पुल** कहते हैं ।

(ii) **पश्चिमी तट रेखा :** पश्चिमी तट रेखा कच्छ की खाड़ी से लेकर कुमारी अंतरीप तक फैली है । इसे तीन भागों में बाँटा जा सकता है : (क) काठियावाड़ तट - यह तट रेखा सूरत से कच्छ प्रदेश तक फैली है । इस तट पर पोरबंदर, ओखा, काण्डला आदि बंदरगाह है । काण्डला बंदरगाह का विकास कराँची बंदरगाह के पाकिस्तान में चले जाने के बाद किया गया है । (ख) **कोंकण तट** - यह तट रेखा सूरत से गोआ तक फैली है । इस तट पर सूरत, मुम्बई तथा मारमगोआ जैसे प्राकृतिक बंदरगाह स्थित है । मुम्बई का प्राकृतिक बंदरगाह इस क्षेत्र का सबसे महत्त्वपूर्ण एवं सुरक्षित बंदरगाह है ।

(ग) **मालाबार तट** - यह तट रेखा गोआ से लेकर दक्षिण में कुमारी अंतरीप तक फैली है । वैसे तो यह तट कटा-फटा है, परन्तु पवनों द्वारा तटों पर बालू संचित कर दिया जाता है, जिससे जलयानों के आवागमन में बाधा पड़ती है । तटीय लैगूनों का उपयोग स्टीमर चलाने तथा नौकाबिहार के लिए किया जाता है । इस क्षेत्र में मछली पकड़ने के अनेक केन्द्र है । कोचिन, कोजीखोड़, त्रिवेन्द्रम, अलप्पी तथा क्वीलोन इत्यादि प्रमुख बंदरगाह है ।

3. **भारत का आंतरिक राजनीतिक विभाजन (Internal Political Divisions of India) :** 15 अगस्त, 1947 के पूर्व तक भारत के अंतर्गत वर्त्तमान पाकिस्तान एवं बांग्लादेश सम्मिलित थे । तात्कालिक भारत अथवा संयुक्त भारत का क्षेत्रफल 46,70,041 वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या 39 करोड़ थी । लेकिन 1947 में अलग हो जाने के कारण भारत तथा पाकिस्तान दो देशों के रूप में विभक्त हो गए । उत्तरी पश्चिमी सीमाप्रांत,

बलूचिस्तान, पश्चिमी पंजाब और सिंध को मिलाकर मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र को पाकिस्तान के रूप में स्थापित किया गया है । इसके हिन्दू बाहुल्य क्षेत्र पूर्वी पंजाब और पश्चिमी बंगाल भारत के अंग बन गए । 1971 में पूर्वी पाकिस्तान बंगलादेश के रूप में एक स्वतंत्र देश बन गया ।

भारत सरकार ने सन् 1953 में **श्री फज़लअली** के नेतृत्व में एक **राज्य पुनर्गठन आयोग (State Reorganisation Commission)** राज्यों के पुनर्गठन करने हेतु सुझाव देने को नियुक्त किया । आयोग ने अपने प्रतिवेदन में सम्पूर्ण राज्यों को दो भागों में बाँटा था - राज्य और केन्द्रशासित प्रदेश में । राज्यों की संख्या 14 और केन्द्रशासित प्रदेशों की संख्या 6 रखी गयी थी । **आयोग** के सुझाव को कुछ आवश्यक परिवर्त्तनों के उपरांत मान लिया गया था । जिसे राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 (State Reorganisation Act, 1956) पारित कर नए राज्यों का निर्माण किया गया था । सन् 1960 में 1 मई को द्विभाषा भाषी राज्य को आधार बनाकर गुजरात एवं महाराष्ट्र के रूप में विभक्त किया गया था । इसी प्रकार 1961 के अगस्त में दादरा और नागर हवेली, दिसम्बर में गोआ, दमन व दीव, सन् 1962 के सितम्बर में पाण्डिचेरी स्वतंत्र हो गए तथा इन्हें केन्द्रशासित प्रदेश के रूप में रखा गया है । पुनः फरवरी 1964 में नागालैण्ड को राज्य का स्तर प्रदान किया गया । 1 नवम्बर, 1966 को तत्कालीन पंजाब को भाषा के आधार पर दो भागें में विभक्त किया गया तथा पंजाब एवं हरियाणा राज्य बनाए गए । इसी तरह 1 अप्रैल, 1970 को असम राज्य को पुनर्गठन के परिणामस्वरूप, असम तथा मेघालयच राज्य में बाँटा गया । मेघालय के अंतर्गत तीन पहाड़ी जिले (गारो, खासी एवं जयन्तिया) को सम्मिलित किया गया । असम की राजधानी दिसपुर तथा मेघालय की राजधानी शिलांग को रखा गया ।

1 जनवरी, 1971 को हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला तो 21 जनवरी, 1971 को मणीपुर तथा त्रिपुरा को भी पूर्ण राज्य तथा अरूणाचल प्रदेश और मिजोरम को केन्द्रशासित राज्य घोषित किया गया । मई, 1975 में सिक्किम को भी भारत में राज्य के रूप में मान्यता मिली । 1987 में भारती संघ में तीन नए राज्य मिजोरम, अरूणाचल प्रदेश और गोवा क्रमशः 23वें, 24वें व 25वें राज्य के रूप में अस्तित्व में आये । अब तक मिजोरम संघशासित प्रदेश था जिसे पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया ।

सन् 2000 में छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड और झारखण्ड को क्रमशः मध्य प्रदेश और बिहार से पृथक कर नए राज्यों के रूप में मान्यता दी । ये तीनों राज्य, भारतीय संघ के 26वें, 27वें एवं 28वें राज्य । वर्ष 2006 में उत्तरांचल का नाम बदलकर उत्तराखंड कर दिया गया । तेलंगाना 2014 में आंध्र प्रदेश से अलग होकर 29वाँ राजय बना ।

वर्त्तमान में भारत देश में 29 राज्य तथा 7 केन्द्रशासित प्रदेश हैं । ये हैं : (1) आंध्र प्रदेश (2) अरूणाचल प्रदेश (3) असम (4) बिहार (5) छत्तीसगढ़ (6) गोवा (7) गुजरात (8) हरियाणा (9) हिमाचल प्रदेश (10) जम्मु व कश्मीर (11) झारखंड (12) कर्नाटक (13) केरल (14) मध्य प्रदेश (15) महाराष्ट्र (16) मणिपुर (17) मेघालय (18) मिजोरम (19) नागालैंड (20) उड़ीसा (21) पंजाब (22) राजस्थान (23) सिक्किम (24) तमिलनाडु (25) त्रिपुरा (26) उत्तराखण्ड (27) उत्तर प्रदेश (28) पश्चिम बंगाल (29) तेंलगाना । केन्द्रशासित प्रदेश के अंतर्गत (1) अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह (2) चंडीगढ़ (3) दादरा एवं नागर हवेली (4) दमन व दीव (5) दिल्ली (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) (6) लक्षद्वीप एवं (7) पुडुचेरी प्रदेश आते हैं ।

चित्र : **भारत का राजनीतिक विभाजन**

4 भारत की नदियाँ (Rivers of India)

भारत के आर्थिक विकास में नदियों का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है । नदियाँ यहाँ आदिकाल से ही मानव के जीवन और गतिविधि का साधन रही हैं । पश्चिम की ओर से आने वाले आर्य लोगों ने सिन्धु और गंगा नदियों के किनारे ही अपना निवास स्थान बनाया । फलत: इन्हीं घाटियों में भारत की मोहनजोदड़ो, हड़प्पा और आर्य सभ्यता का जन्म हुआ । भारतीय नदियाँ न केवल सिंचाई ही करती है वरन् इनके मार्गों में बनने वाले जलप्रपातों द्वारा जलविद्युत शक्ति भी पैदा की जाती है । उत्तर प्रदेश की गंगा नदी तथा कर्नाटक की कावेरी नदी इसके मुख्य उदाहरण हैं । नदियाँ आवागमन के प्रमुख साधन हैं । प्राचीन काल में इन्हीं नदियों द्वारा आन्तरिक व्यापार नावों द्वारा होता था किन्तु सड़कों और रेल मार्गों के निर्माण और जलमार्गों के प्रति उपेक्षा भाव होने से इस महत्त्वपूर्ण साध न का विकास कम हो गया । चूंकि भारत की प्राचीन सभ्यता के स्थल इन्हीं नदियों की घाटियाँ रही हैं अतएव आज भी भारत के अधिकांश प्राचीन मंदिर, धार्मिक और व्यावसायिक केन्द्र इन्हीं नदियों के तट पर स्थित पाये जाते हैं । ये नदियाँ आदिकाल से ही मानव को मछली के रूप में भोज्य पदार्थ भी प्रदान करती आयी है । उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु तथा असम की नदियों की मिट्टी में स्वर्ण-कण भी पाये जाते हैं। उत्तरी भारत की नदियों के जल का उपयोग सिंचाई के लिए उपयुक्त है । अतएव उत्तरी भारत में (विशेषकर पंजाब, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश में) नहरों का जाल-सा बिछा है । गंगा और सतलज तथा दक्षिणी भारत की नदियों में डेल्टा की उर्वर शक्ति नदियों के कारण ही स्थिर रह पाती है ।

4.1 उत्तरी भारत की प्रमुख नदियाँ (Principal Rivers of Northern Rivers) : उत्तरी भारत की अधिकांश नदियाँ हिमालय से निकलती हैं, जहाँ पूरे वर्ष हिम जमा रहता है ।

हिमालय से निकलने वाली 23 प्रमुख नदियाँ हैं जिनका सम्बन्ध तीन बड़ी नदी प्रणालियों से है । हिमालय पर्वतीय अपवाह प्रणाली को मुख्यत: तीन अपवाह प्रणालियों में विभक्त किया जा सकता है : (अ) ब्रह्मपुत्र अपवाह तन्त्र, (ब) गंगा अपवाह तंत्र, (स) सिन्धु अपवाह तन्त्र ।

(अ) ब्रह्मपुत्र अपवाह तन्त्र में ब्रह्मपुत्र, लुहित, दियाबंग, सुबंसारी, मानस, सनकोशी, रैडाक और तिस्ता नदियाँ सम्मिलित हैं । ये नदियाँ उत्तर-पूरब की ओर बहकर दक्षिण-पश्चिम में गंगा के साथ मिलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है ।

(ब) गंगा नदी अपवाह तन्त्र सरयू, कोसी, भागवती, राप्ती, गंडक, करनाली, रामगंगा, खोह, काली (या शारदा), महानन्दा, बूढ़ी गंडक एवं यमुना आदि नदियों से मिलकर बनी है । ये सब गंगा में मिलकर पूरब की ओर बहती हुई विशाल डेल्टा बनाकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है ।

चित्र : **जल अपवाह प्रणाली**

(स) सिन्धु अपवाह तन्त्र में सतलज, व्यास, चिनाव, झेलम, रावी और सिन्धु नदियाँ सम्मिलित हैं । ये सभी नदियाँ उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती हुई अरब सागर में गिरती है ।

उत्तरी भारत के अपवाह के क्षेत्र को सामान्यत: निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा जा सकता है :

(1) **बड़ी नदियाँ** (Major Rivers), जिनमें प्रत्येक का अपवाह क्षेत्र 20,000 वर्ग किलोमीटर से अधिक का है । ऐसे 14 नदी बेसिन है ।

(2) **मध्यम श्रेणी की नदियाँ** (Medium Rivers), जिनमें प्रत्येक का अपवाह क्षेत्र 2,000 से 20,000 वर्ग किलोमीटर का है । इस श्रेणी में 44 नदियाँ आती हैं ।

(3) **छोटी नदियाँ** (Minor Rivers), जिनमें प्रत्येक का अपवाह क्षेत्र 2,000 वर्ग किलोमीटर से कम है । ऐसी असंख्य नदियाँ हैं ।

बड़ी और मध्य श्रेणी की नदियों द्वारा कुल जलराशि का 90% बहाकर ले जाया जाता है ।

(अ) **गंगा नदी का अपवाह तन्त्र (Drainage System of the Ganga) : गंगा नदी का अपवाह तन्त्र** उत्तरी भारत का प्रमुख नदी तन्त्र है । गंगा नदी भारत के सघन आबाद क्षेत्र के बीच होकर बहती है । इसकी मुख्य सहायक नदियाँ, जो इसमें उत्तर की ओर से आकर मिलती है, यमुना, रामगंगा, करनाली, राप्ती, गंडक, कोसी, काली आदि हैं तथा दक्षिण के पठार से निकल कर मिलने वाली नदियों में चम्बल, सिन्धु, बेतवा, केन, दक्षिण टोंस और सोन मुख्य हैं ।

(1) **गंगा (Ganga)** नदी वास्तव में **भागीरथी (Bhagirathi)** और **अलकनन्दा (Alaknanda)** नदियों का ही सम्मिलित नाम है । अलकनन्दा नदी गढ़वाल (तिब्बत सीमा के निकट 7,800 मीटर ऊँचाई) से निकलती है । यह **धौली (Dhauli)** और **विष्णु गंगा (Vishnu Ganga)** आदि नदियों से मिलकर बनी है । ये दोनों **विष्णु प्रयाग** के निकट मिलकर एक हो जाती है । इसके बाद अलकनन्दा मध्य हिमालय के प्रमुख और गहरे खड्ड में होकर बहती है जिसके एक ओर नन्दादेवी और दूसरी ओर बद्रीनाथ की ऊँची चोटियाँ हैं । इसकी एक अन्य सहायक नदी **पिंडार (Pindar)** है जो नन्दादेवी से निकलकर **कर्ण प्रयाग** में अलकनन्दा से मिल जाती है । बद्रीनाथ के दक्षिण की ओर **रूद्रप्रयाग** में **मन्दाकिनी नदी** इससे मिलती है । त्रिशुल पर्वत के पश्चिम में **नन्दप्रयाग** में **पिंडार** और **अलकनन्दा** नदियाँ मिलती है । देवप्रयाग के निकट **अलकनन्दा** और **भागीरथी** मिलकर एक हो जाती है । यहीं से अलकनन्दा पहाड़ियों को काट कर शिवालिक श्रेणियों में होती हुई ऋषिकेश और हरिद्वार पहुँचती है ।

गंगा नदी का मुख्य स्त्रोत **गंगोत्री हिमानी** (Gangotri Glacier) है जो केदारनाथ चोटी के उत्तर में **गौमुख** नामक स्थान पर 6,600 मीटर की ऊँचाई पर है । इसी के नीचे उतरकर गंगोत्री का पवित्र स्थान है । मुख्य हिमालय के कुछ उत्तर में **जान्हवी** (Jhanvi) नदी से निकलकर भागीरथी से गंगोत्री के निकट मिलती है । दोनों नदियाँ एक

होकर मुख्य हिमालय श्रेणियों में **बन्दरपूछ** और **श्रीकान्ता** चोटियों के बीच 4,870 मीटर गहरी घाटी बनाकर बहती है ।

गंगा नदी हरिद्वार के निकट मैदान में प्रवेश करती है जिससे थोड़ी दूर पर ऊपर गंगा नहर निकाली गयी है । यह नदी हरिद्वार से पहले दक्षिण की ओर फिर दक्षिण-पूरब बहती हुई उत्तर प्रदेश के मेरठ, फर्रुखाबाद, प्रयागराज, मिर्जापुर, बनारस, बलिया आदि जिलों में होती हुई बहती है । प्रयाग के निकट दाहिनी ओर यमुना नदी आकर गिर जाती है । यहाँ से गंगा पूरब की ओर घूमती है । यहाँ इसमें गाजीपुर के निकट **गोमती** (Gomti) और बक्सर के निकट **घाघरा** (Ghagra) मिलती है । मध्य के पठार से निकलती हुई सोन नदी गंगा से पटना के निकट मिलती है । कुछ और पूरब की ओर हटकर **गण्डक** (Gandak) और **कोसी** (Kosi) भी गंगा में मिल जाती है । यहाँ से मुख्य नदी पदमा के नाम से राजमहल की पहाड़ियों को पार करके दक्षिण-पूरब की ओर बहती हुई **ग्वालंदो** के ब्रह्मपुत्र से मिल जाती है । यहाँ नदी कई किलोमीटर चौड़ी होकर कई धाराओं में बंट जाती है । इसके पश्चात् **मेघना** (Meghana) नदी से मिलकर 79 किलोमीटर चौड़ा मुहाना बनाती हुई बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है । बंगाल तक पहुँचने में यह नदी 2,071 किलोमीटर की दूरी तय करती है। इसके अपवाह क्षेत्र का क्षेत्रफल 9,51,600 वर्ग मिलोमीटर है । गंगा की अन्य धाराएँ क्रमशः **हुगली, माटला, रायमंगल, मलंचा, हरिंगघाटा, नाडिया** और **भागीरथी** है ।

गंगा का डेल्टा हुगली और मेघना नदियों के बीच में है । यह विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा माना जाता है जिसमें अनेक धाराओं और छोटे-छोटे द्वीपों का जाल-सा बिछा है । डेल्टा का समुद्री भाग घने जंगलों से ढँका है । सुन्दरी वृक्षों की अधिकता से यह भाग **सुन्दर वन** (Sunderban) कहलाता है । पश्चिमी बंगाल का सबसे प्रमुख जलमार्ग हुगली नदी है । यह विश्व की सबसे अधिक **विश्वासघाती नदी** (treacherous) है । इसी के तट पर कलकत्ता बन्दरगाह है जिसे **पूरब का लन्दन** (London of the East) कहा जाता है ।

(2) **यमुना** (Yamuna) गंगा नदी की सबसे प्रमुख सहायक नदी है जो **जमुनोत्री हिमनद्** (Jamunotry Glacier) से 3,965 मीटर ऊँचाई से निकलती है । हिमालय पर्वत की यात्रा के ऊपरी भाग में उत्तर की ओर से इसमें **टोंस** (Tons) नदी आकर मिलती है । इसके बाद यह लघु-हिमालय की पहाड़ियों को काटकर आगे बढ़ती है जहाँ पश्चिम की ओर से इसमें **गिरी** (Giri) और पूरब की ओर से **आसन** (Asan) नदियाँ आकर मिल जाती है । मैदान में उतरकर यह नदी दिल्ली, मथुरा, आगरा और इटावा जिलों में होकर बहती है । जहाँ इसमें **चम्बल** (Chambal) और **काली सिन्ध** (Kali Sindh) आकर मिलती है । हमीरपुर के निकट **बेतवा** (Betwa) और **केन** (Ken) नदियाँ इसमें मिलती हैं । अन्त में प्रयागराज में संगम नामक स्थान पर यमुना नदी गंगा से मिलती है जहाँ गंगा एवं सरस्वती के साथ इसका सम्मिलित नाम **त्रिवेणी** (Triveni) है । यमुना की सम्पूर्ण लम्बाई 1,300 किलोमीटर है । इसके अपवाह का क्षेत्रफल 3,59,000 वर्ग किलोमीटर है । इससे ऊपरी भाग में लकड़ियाँ तथा मैदानी भाग में पत्थर, कपास एवं अनाज आदि ढोया जाता है ।

(3) **राम गंगा** (Ram Ganga) मुख्य हिमालय श्रेणी के दक्षिणी भाग से नैनीताल के निकट से निकलती है, शिवालिक पहाड़ियों के कारण इसका अपवाह दक्षिण-पश्चिम की ओर हो जाता है और मैदान में उतरने पर दक्षिण-पूरब की ओर मुड़कर मुरादाबाद, बरेली, बदायूँ और शहजहाँपुर जिले में 590 किलोमीटर बहती हुई कन्नोज के निकट गंगा में जाकर मिल जाती है । यह नदी 602 किलोमीटर लम्बी है तथा इसका अपवाह क्षेत्र 32,800 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला है ।

(4) **काली गंगा** (Kali Ganga) और शारदा (Sharda) नदी कुमायुँ हिमालय के उत्तरी-पूर्वी भाग में **मिलाम हिमनद** (Milam Glacier) से निकलती है । इसकी दो सहायक नदियाँ हैं : **सर्मा** (Sarma) और **लिसार** (Lisar) जो अपने ऊपरी भागों में दक्षिणी-पूर्वी दिशा में बहती हैं । किन्तु मुख्य नदी में **सरजू** और **रामगंगा** नदियाँ उत्तर-पश्चिम में आकर **पंचेश्वर** के निकट मिलती है । यहीं से यह नदी सरजू या शारदा के नाम से पहाड़ियों में बहती हुई **बरमदेव** के निकट मैदान में प्रवेश करती है ।

(5) **करनाली** (Karnali) नदी को पहाड़ी क्षेत्र में **कौरियाला** (Kauriyala) तथा मैदान में **घाघरा**

(Ghaghra) कहते हैं । यहा तकलाकोट से 37 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम की ओर मप्सातुँग हिमानी से निकलती है और गुरलामांधाता के दक्षिणी-पश्चिमी सिरों का चक्कर लगाकर आगे बढ़ती है । दक्षिण-पूरब दिशा में बहकर दक्षिण-पश्चिम की ओर हिमालय श्रेणी को पार करती है । शिवालिक को पार करते समय यह नदी **शीशपानी** नामक 180 मीटर चौड़ा खड्ड बनाती हुई 610 मीटर गहरी बहती है । इसी के बाद इसमें तेज रपटें बनती जाती है । मैदानी भाग में पहुँचकर इसकी दो शाखाएँ बन जाती है । यह नदी अयोध्या, फैजाबाद होती हुई बलिया जिले की पूर्वी सीमा के निकट गंगा में मिल जाती है । यह नदी 1,080 किलोमीटर लम्बी है तथा इसका अपवाह क्षेत्र 1,27,500 वर्ग किलोमीटर है ।

(6) **गंडक** (Gandak) नदी को नेपाल में **सालिग्रामी** (Saligrami) और मैदान में **नारायणी** (Narayani) नदी कहते हैं क्योंकि इसमें गोलमटोल सालिग्राम बहुत मिलते हैं । इनकी दो मुख्य शाखाएँ हैं : पश्चिम की ओर **काली गंडक** (Kali Gandak) तथा पूरब की ओर **त्रिसूली गंगा** (Trisuli Ganga) जिनकी सहायक नदियाँ महान् हिमालय में निकलती है । गंडक शिवालिक श्रेणी को त्रिवेणी नामक स्थान पर पार करती है और पटना के निकट गंगा में मिल जाती है । यह नदी 425 किलोमीटर लम्बी है तथा इसका अपवाह क्षेत्र 45,800 वर्ग किलोमीटर है जिसमें से भारत में केवल 9,540 वर्ग किलोमीटर ही है, शेष नेपाल में है ।

(7) **कोसी** (Kosi) गंगा की दूसरी मुख्य धारा **अरूण** (Arun) के नाम से गोसाईथान के उत्तर से निकलकर काफी दूर तक पूरब दिशा में बहती है । इसका बेसिन ब्रह्मपुत्र के बेसिन के दक्षिण में है जहाँ अरूण नदी सर्पाकार रूप में बहती है । यहाँ इसमें पर्वत की ओर से **यारू** (Yaru) नदी आकर मिलती है । यहाँ से सम्मिलित रूप से दक्षिण को बहती है । अरूण नदी पश्चिम में माउण्ट एवरेस्ट और पूरब में कंचनजंघा के बीच दक्षिण दिशा को बहती हुई आगे बढ़ती जाती है । यहाँ इसकी घाटी बहुत गहरी है । लगभग 90 किलोमीटर बहने के बाद इसमें पश्चिम की ओर से **सून कोसी** (Sun Kosi) और पूरब की ओर से **तामूर कोसी** (Tamur Kosi) नदियाँ आकर मिलती है । सून कोसी की कई सहायक नदियाँ हैं - **इन्द्रावती, भोट कोसी, ताम्बा कोसी, लीख, दूध कोसी** आदि । **कोसी** नदी शिवालिक को पार कर उत्तर खड्ड के निकट मैदान में प्रवेश करती है तथा गंगा में मिलने के पूर्व स्वयं का भी डेल्टा बनाती है । यह नदी 730 किलोमीटर लम्बी है तथा इसका अपवाह क्षेत्र 86,900 वर्ग किलोमीटर है, इसमें से भारत में 21,500 वर्ग किलोमीटर भूमि है । इस नदी में बाढ़ें बहुत अधिक आती है जिससे अपार जन-धन हानि होती है ।

(8) **चम्बल या चर्मावती** (Chambal or Charmavati) नदी मध्य प्रदेश में मऊ के निकट जनापाव पहाड़ी से निकलती है जो समुद्रतल से 616 मीटर ऊँची है । यह पहले उत्तर-पूरब की ओर बहकर बूँदी, कोटा और धौलपुर जिलों में प्रवेश करती है फिर पूर्वी भाग में बहती हुई इटावा से 38 किलोमीटर दूर यमुना में जा मिलती है । **काली सिन्ध, पार्वती, सिप्तारों** और **बनास** इसकी सहायक नदियाँ हैं । यह नदी 965 किलोमीटर लम्बी है ।

(9) **बेतवा या वत्रावती** (Betwa or Vatravati) मध्य प्रदेश में भोपाल से निकलकर उत्तरी-पूर्वी दिशा से बहती हुई भोपाल, ग्वालियर, झाँसी और जालौन जिलों में बहती हुई अपनी ऊपरी मार्ग में कई झरने बनाती है । झाँसी के निकट यह काँप के मैदान में धीमे-धीमे बढ़ती है । यह 480 किलोमीटर बहती हुई हमीरपुर के निकट यमुना में मिल जाती है ।

(10) **सोन** (Sone) नदी अमरकटक की पहाड़ियों से निकलकर लगभग 780 किलोमीटर बहने के बाद पटना के निकट गंगा में मिल जाती है । इसका अपवाह क्षेत्र 71,900 वर्ग किलोमीटर है ।

(ब) ब्रह्मपुत्र अपवाह तन्त्र (Drainage System of Brahmputra)

ब्रह्मपुत्र (Brahmputra) नदी को **ब्रह्म की बेटी** कहा जाता है । यह भारत की सबसे बड़ी नदी है । ये तिब्बत में कैलाश पर्वत की मानसरोवर झील से 80 किलोमीटर की दूरी पर 5,150 मीटर की ऊँचाई से निकलती है । इसका उद्‌गम दक्षिण-पश्चिम में सतलज और सिन्धु के स्रोतों के निकट ही है । यह नदी **सांपू** है । अपने

उद्गम से 9 किलोमीटर दूर यह कोटी दर्रे से होकर बहती है । धौलगिरि पर्वतमाला को काटकर यह कूलू, मण्डी और काँगड़ा जिलों में बहती हुई अमृतसर तथा कपूरथला होती हुई कपूरथला के निकट सतलज से मिल जाती है । यह 470 किलोमीटर लम्बी है तथा इसका अपवाह क्षेत्र 25,900 वर्ग किलोमीटर है ।

उत्तरी भारत की विशेषताएँ (Features of North Indian Rivers)

(1) हिमालय पर्वत से निकलने वाली प्रायः तीन नदियों में तीन खण्ड पाये जाती हैं । पहाड़ी खण्ड, मैदानी खण्ड और डेल्टा खण्ड । ये नदियाँ भारत की भूमि को न केवल सींचती ही है किन्तु ये नावें चलाने योग्य भी हैं ।

(2) हिमालय की कई नदियाँ तो हिमालय पर्वत से भी पुरानी है अर्थात् अब हिमालय पर्वत का अस्तित्व नहीं था तब भी सिन्धु, सतलज, ब्रह्मपुत्र, गण्डक और कोसी आदि नदियाँ बहतीं थीं । हिमालय पर्वत के बनने के फलस्वरूप ये नदियाँ भी इन पर्वतों में अधिक गहरी घाटियों में बहने लगीं ।

(3) हिमालय से निकलने वाली नदियों द्वारा लायी गयी उपजाऊ मिट्टी से ही भारत का बड़ा मैदान बना है ।

(4) हिमालय की अधिकतमर घाटियाँ V आकर की है (अर्थात् बहुत गहरी है) । यद्यपि उत्तर की ओर हिमनदीं से कटी U आकर की चौड़ी घाटियाँ मिलती है ।

(5) ये नदियाँ हिमालय पर्वत के दोनों ढालों का जल लेकर क्रमशः अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में गिरती है । अधिक वर्षा और हिम के कारण इन नदियों में सदैव जल भरा रहता है । अतएव इनका सर्वाधिक उपयोग सिंचाई के लिए नहरें निकालने में किया गया है ।

(6) हिमालय की कई बड़ी-बड़ी नदियों के जल को अपने में मिला लिया है । उदाहरण के लिए गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र आदि नदियों ने कई छोटी नदियों के जल को, जो तिब्बत में बहती है, अपने में हड़प लिया (Captuar) है ।

4.2. दक्षिणी भारत की प्रमुख नदियाँ (Principal Rivers of Southern India) : दक्षिणी भारत में अनेक छोटी-बड़ी नदियाँ पायी जाती हैं । इनमें से अधिकांश बंगाल की खाड़ी में, कुछ अरब सागर में और कुछ उत्तर प्रदेश की ओर बहती हुई गंगा नदी प्रणाली में गिरती हैं । कुछ नदियाँ अरावली तथा मध्य प्रदेश के पहाड़ी भागों में निकलकर कच्छ के रन अथवा खम्भात की खाड़ी में गिरती है ।

(1) **गोदावारी** (Godawari) नदी दक्षिण पठार की सबसे बड़ी नदी है जो महाराष्ट्र में नासिक से दक्षिण-पश्चिम की ओर 64 किलोमीटर दूर त्र्यबक गाँव से 1,067 मीटर ऊँचाई से निकलती है । दक्षिण में गोदावरी की समान्तर बहने के बाद मजरा (Manjra) नदी दाहिने किनारे पर इससे मिल जाती है । यहाँ से यह नदी दक्षिण-पूरब की ओर मुड़ती है । यहाँ इसके बायें किनारे पर बैनगंगा (Benganga), वर्धा (Wardha), और पैनगंगा (Penganga) का संयुक्त जल गोदावरी में मिल जाता है । मोड़ के कुछ आगे इन्द्रावती (Indravati) नदी दुर्गम प्रदेश को पार करती हुई गोदावरी के बायें किनारे पर है । इन्द्रावती के संगम से उत्तर-पूरब की ओर सबरी (Sabri) नदी इसमें मिलती है । यह नदी 1,465 किलोमीटर लम्बी है तथा अपवाह क्षेत्र 3,13,389 वर्ग किलोमीटर है ।

(2) **महानदी** (Mahanadi) मध्य प्रदेश के रायपुर जिले में सिहबा के निकट 442 मीटर की ऊँचाई से निकलती है और दक्षिण-पूरब की ओर बढ़ती है । यह नदी मध्य प्रदेश के आधे भाग और आँध्र प्रदेश के कुछ भाग का जल लेकर लगभग 858 किलोमीटर बहती हुई उड़ीसा में बड़ा डेल्टा बना कर बंगाल की खाड़ी मिलती है । डेल्टा के पास ही बायीं ओर ब्राह्मणी (Brahamani) नदी आ मिलती है । आगे जाकर इसमें वैतरणी (Vaitarni) नदी मिलती है । इसका अपवाह क्षेत्र लगभग 1,32,090 वर्ग किलोमीटर है ।

(3) **कृष्णा** (Krishna) नदी महाबलेश्वर के निकट पश्चिमी घाट पर 1,337 मीटर की ऊँचाई से निकलती है । इसकी मुख्य सहायक नदियाँ भीमा, तुंगभद्रा, मूसी, अमरावती, कोयना, पंच-गंगा, दूधगंगा, घाटप्रभा, मालप्रभा

आदि है । विजयवाड़ा के पास दो पहाड़ियों के बीच में इसकी चौड़ाई 5,472 मीटर है । विजयवाड़ा के नीचे कृष्णा की धारा धीमी पड़ जाती है और इसकी चौड़ाई 6 से 8 किलोमीटर हो जाती है । विजयवाड़ा के पास **कृष्णा एनीकट** बनाकर दो नहरें निकाली गयी हैं । यह नदी 1,400 किलोमीटर लम्बी है तथा अपवाह क्षेत्र 2,58,000 वर्ग किलोमीटर है ।

(4) **कावेरी** (Cauvery) नदी कुर्ग जिले में ब्रह्मागिरी पहाड़ी से 1,341 मीटर की ऊँचाई से निकलकर दक्षिण-पूरब की ओर कर्नाटक तमिलनाडु राज्यों में होकर बहती है । यह नदी 805 किलोमीटर लम्बी है तथा अपवाह क्षेत्र 80,290 वर्ग किलोमीटर है । कर्नाटक राज्य में इसके दोनों किनारों पर उपजाऊ मिट्टी पायी जाती है । इसलिए इसके अपवाह को रोकने के लिए कई स्थानों पर बाँध बनाये गये हैं । कर्नाटक में इसने श्रीरंगपट्टम और शिवसमुद्रम द्वीपों को घेर रखा है । यह दोनों द्वीप पवित्र माने जाते हैं । कावेरी को दक्षिण गंगा कहते हैं। शिवसमुद्रम के नीचे कावेरी की दोनों शाखाओं में कई सुन्दर प्रपात पाये जाते हैं ।

(5) **माही** (Mahi) नदी नर्मदा और ताप्ती के बाद गुजरात की अन्य बड़ी नदी है जो विन्ध्याचल के पश्चिमी भाग से समुद्रतल से 545 मीटर की ऊँचाई पर अमझरा में मेदह झील से निकलती है । आरम्भ में यह विन्ध्याचल श्रेणी के समान्तर गहरी घाटी में होकर बहती है । इसके दोनों ओर 300 मीटर ऊँचे किनारे खड़े हैं । पूरब की ओर से इसमें कई सहायक नदियाँ मिलती है । पश्चिमी शुष्क भाग से कोई सहायक नदी नहीं आती है । 225 किलोमीटर के बाद बागर की पहाड़ियाँ इसे पश्चिम की ओर मोड़ देती है । पश्चिम की ओर बहती हुई यह **खम्भात की खाड़ी** में गिर जाती है । यह 560 किलोमीटर लम्बी है ।

(6) **नर्मदा** (Narmada) (जिसे रेवा, शांकरी अथवा मेकलसुता भी कहा जाता है) अमरकंटक में 1,057 मीटर की ऊँचाई से निकलकर एक तंग, गहरी और सीधी घाटी में पश्चिम की ओर बहती है । नर्मदा के उत्तर में विन्ध्याचल और दक्षिण में सतपुड़ा की ऊँची दीवार खड़ी हुई है । इस भाग में नर्मदा की धारा बड़ी तेज और निर्मल है । जबलपुर के नीचे भेड़ाघाट की संगमरमर की चट्टानों और कपिलधारा (धुँआधार) प्रपात की दृश्य बड़ा मनोहारी है जो 23 मीटर ऊँचाई से गिरता है । मध्य प्रदेश छोड़ने के बाद नर्मदा बीच में चौड़ी हो जाती है लेकिन इसकी धारा धीमी पड़ जाती है । भड़ोच के नीचे इसका मुहाना 27 मीटर चौड़ा है । यह नदी 1,312 किलोमीटर लम्बी है और इसका अपवाह क्षेत्र 93,180 वर्ग किलोमीटर है । इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हिरन, तेंदुना, बरमा, शेर, दूधी, तवा, करजन, कनार आदि हैं ।

(7) **तापी या ताप्ती** (Tapi or Tapti) नदी मध्य प्रदेश के वेतूल जिले में मुल्ताई (मूल-ताप्ती) नगर के पास से 762 मीटर की ऊँचाई से निकलती है । तापी नदी की घाटी सतपुड़ा के दक्षिण में है । यह मध्य प्रदेश में 724 किलोमीटर बहने के बाद खम्भात की खाड़ी में गिर जाती है । इसकी मुख्य सहायक नदी पूर्णा है । यह 338 किलोमीटर लम्बी है तथा इसका अपवाह क्षेत्र 18,311 वर्ग किलोमीटर है ।

4.3 दक्षिण भारत की नदियों की विशेषताएँ (Features of South Indian Rivers) : दक्षिण के पठार पर बहने वाली नदियों में अनेक विशेषताएँ पायी जाती हैं, जैसे :

(1) बड़े मैदान की अपेक्षा यहाँ की नदियाँ छोटी और कम संख्या में हैं । यहाँ वर्षा कम होती है इसलिए इन नदियों में ग्रीष्म ऋतु में जल की मात्रा कम रहती है । चूंकि ये पहाड़ी प्रदेश पर होकर बहती है । अत: कृष्णा, कावेरी, गोदावरी जैसी प्रमुख नदियाँ भी नावें चलाने के उपयुक्त नहीं है ।

(2) मार्च से जून तक जब मैदान की नदियों में हिमालय का हिम पिघल कर आता है तो पर दिनों पठार की नदियाँ सूख जाती है क्योंकि उनके उद्‌गम स्थान हिमाच्छादित पर्वतों में नहीं है ।

(3) धरातल पथरीला होने के कारण पठार पर गिरने वाला वर्षा का जल धरती में नहीं सोखता परन्तु शीघ्र ही नदियों में बह जाता है । यही कारण है कि पठार की नदियों में आकस्मिक रूप से बाढ़ें आ जाती है जो शीघ्र ही कम भी हो जाती है । चम्बल, सोन और महानदी आकस्मितक बाढ़ों के लिए प्रसिद्ध हैं ।

(4) पठार कर धरातल ढालू और चट्टानी होने के कारण नदियों में सिचाई के लिए नहरें निकाली जा सकती हैं ।

(5) पठार की प्रायः सभी नदियाँ बड़ी पुरानी हैं । सैकड़ों वर्षों से यह नदियाँ अपने मार्ग को काटती आ रही है । अतः अब इनकी काटने की शक्ति नष्ट प्रायः हो चुकी है । इनकी घाटियाँ चौड़ी किन्तु छिछली हैं ।

4.4 उत्तरी और दक्षिणी भारत की नदियों की तुलना (Comparision Between Northern and Southern Indian Rivers) : उत्तरी और दक्षिणी भारत की नदियों में निम्न अन्तर पाया जाता है :

(1) **नदियों की धारा**-हिमालय से निकलने वाली नदियाँ नवीन वलय (Folded) पर्वतों से निकलती हैं । इसलिए अपने पहाड़ी मार्ग में उनकी धारा बहुत तेज होती है । ये नदियों की विकास अवस्था में अभी नयी और अपरिपक्व हैं । ये अभी भी अपने मार्ग की शैलों को काटने का कार्य कर रही हैं और अपनी धारा का ढाल धीमा बना रही हैं जबकि दक्षिण की नदियाँ अधिक पुरानी हैं । उनकी घाटियाँ चौड़ी और छिछली हैं तथा प्रपातों को छोड़कर इनका ढाल बहुत ही साधारण है । नदियाँ हर अवस्था में भूमि-अपक्षरण के अन्तिम काल या आधार तल (Base Level) को पहुँच चुकी हैं ।

(2) **मैदानी भाग**-हिमालय की नदियों के मार्ग पर्वतीय, मैदानी और डेल्टा की विभिन्न उच्चावचन अवस्थाएँ पायी जाती हैं, किन्तु दक्षिण नदियों का मैदानी भाग बहुत ही थोड़ा है । अतः हिमालय से निकलने वाली नदियों में सिंचाई और नाव चलाने की सुविधा पायी जाती है जबकि दक्षिण की नदियाँ इस दृष्टि से प्रायः उपयोगी नहीं है । केवल डेल्टाई भाग में ही इनमें नावें चलायी जा सकती हैं तथा सिंचाई के लिए इनका उपयोग किया जा सकता है ।

(3) **जल की मात्रा**-हिमालय की नदियों की बड़ी-बड़ी हिमानियों से अनन्त राशि में जल मिलता है । हिमालय में यह 40,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली है जबकि दक्षिणी नदियाँ वर्षा के जल ही पूरित रहती हैं । अतः उत्तरी नदियाँ प्रायः वर्ष भर ही भरी रहती है किन्तु दक्षिणी नदियाँ ग्रीष्म में सूख जाती हैं और वर्षा ऋतु में उनमें भयंकर बाढ़ें आ जाती हैं । अस्तु, हिमालय से निकलने वाली नदियों के तट पर अनेक स्थानों पर प्रमुख नगर और व्यापारिक केन्द्र स्थापति हैं किन्तु दक्षिण नदियों के तट पर नगरों का प्रायः अभाव सा है ।

(4) **मिट्टी बहाकर लाना**-हिमालय से निकलने वाली नदियाँ मुलायम शैलों और अनेक प्रकार के धरातल पर बहकर आती हैं अतः वे अपने साथ उत्तम चिकनी मिट्टी और कीचड़ बहा ले आती है जिसे बाढ़ के समय अपने तट के दोनों ओर बिछा देती हैं । फलस्वरूप ये क्षेत्र अत्यधिक उपजाऊ हो जाते हैं । इसके विपरीत दक्षिण की नदियाँ पुरानी कठोर शैलों पर होकर बहती हैं अतः इनके जल में बहुत कम मिट्टी बहकर आती है जिससे यह नदियाँ उपजाऊ मैदान बनाने वाली नहीं हैं ।

(5) **प्रपात बनाना**-हिमालय की नदियाँ बहुत कम प्रपात बनाती हैं किन्तु प्रायद्वीप की प्रायः सभी नदियाँ पठार से उतरते समय मार्ग में झरने बनाती हैं जिनका उपयोग शक्ति उत्पादन के लिए किया जाता है ।

5 अभ्यास के प्रश्न (Question for Exercise)

1. भारत की स्थलाकृतियों को बताएँ ।
   Describe the landforms of India.
2. भारत की स्थिति एवं विस्तार को समझाएँ ।
   Discuss the location and extent of India.
3. उत्तरी भारत की नदियों के बारे में विस्तार से बताएँ ।
   Give details about rivers of Northern India.
4. दक्षिण भारत की नदियों के बारे में विस्तार से बताएँ ।
   Give details about rivers of Southern Indian.
5. उत्तरी तथा दक्षिण भारत की नदियों का तुलनात्मक अध्ययन करें ।
   Give a comparative study of Northern and Southern Indian Rivers.

❐ ❐ ❐